Date - 17/08/2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. - Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. - 8409587640

Class - B.A. -I (Hons.)

Topic - Theories of Error : Mimamsa

Scanned with CamScanner

ख्यातिवाद (Theories of Error)

भारतीय दर्शनों में भ्रम के सम्बन्ध में गहन विवेचन किया गया है। भ्रम संबंधी विभिन्न सिद्धान्तों को 'ख्यातिवाद' कहा गया है।

ख्याति शब्द का शाब्दिक अर्थ है - ज्ञान, परन्तु भारतीय दर्शन में यह भ्रम - ज्ञान के अर्थ में ~~रूढ़~~ रूढ़ हो गया है।

भ्रम की उत्पत्ति और स्वरूप को लेकर भारतीय दर्शन में मतभेद है। इसका मुख्य कारण इन विभिन्न दर्शनों की अपनी पृथक-पृथक मौलिक मान्यताएं हैं।

Scanned with CamScanner

मीमांसा दर्शन में इस सम्बन्ध में दो मत हैं।

(1) प्रभाकर का अख्यातिवाद (2) कुमारिल का विपरीत ख्यातिवाद

अख्यातिवाद

प्रभाकर दृढ़ वस्तुवादी हैं। अतः उनके अनुसार प्रत्येक ज्ञान सत्य होता है। कोई ज्ञान असत्य नहीं होता। अख्याति का शाब्दिक अर्थ है - ज्ञान का अभाव। इनके अनुसार भ्रम एक ज्ञान या समग्र ज्ञान या मौलिक ज्ञान नहीं है बल्कि दो ज्ञानों का योग है। इसमें एक प्रत्यक्ष ज्ञान है और दूसरा स्मरण ज्ञान। भ्रम में प्रत्यक्षगम्य रस्सी को पूर्वकाल में देखी गई वस्तु सर्प की स्मृति के साथ समन्वित कर देते हैं। स्मृति दोष के कारण हम यह भूल जाते हैं कि सर्प स्मृति का विषय है। स्पष्ट है कि स्मृति - प्रमोष (स्मरण - लोप) के कारण प्रत्यक्ष और स्मृति में भेद के ज्ञान का ग्रहण नहीं हो पाता है जिसके कारण भ्रम होता है। इसलिए इसे 'भेदाग्रह' भी कहा जाता है।

प्रभाकर के अनुसार भ्रम के दो घटक होते हैं -

(1) ज्ञानात्मक और (2) अज्ञानात्मक।

ज्ञानात्मक घटक दो पृथक - पृथक विषयों के आंशिक ज्ञानों की उपस्थिति है। अज्ञानात्मक घटक इन दोनों आंशिक ज्ञानों एवं उनके विषयों के भेद का अज्ञान है।

प्रभाकर के अनुसार भ्रांति तभी हो सकती है जब मिथ्या वस्तु का सत रूप में ज्ञान हो। परन्तु ऐसा कभी नहीं होता। हम दो सत एवं स्वतंत्र वस्तु में ही स्मृति - प्रमोष के कारण भेद नहीं कर पाते हैं और एक वस्तु के धर्म को (स्मृत वस्तु के धर्म) को दूसरी वस्तु (रस्सी के रूप पर) पर आरोपित कर देते हैं।

Scanned with CamScanner

आलोचना

प्रभाकर भ्रम को दो ज्ञानों का योग कहते हैं परन्तु जब भ्रांति होती है तो सिर्फ एक ज्ञान प्राप्त होता है और हम उसी के अनुसार आचरण भी करते हैं।

Scanned with CamScanner